कृतिका भाग 2 (कक्षा 10)

विस्तृत अध्ययन नोट्स (Detailed Notes)

Schorbit

पाठ 1: माता का अँचल (शिवपूजन सहाय)

1. लेखक परिचय

शिवपूजन सहाय हिंदी के प्रसिद्ध उपन्यासकार और संपादक थे। यह पाठ उनके प्रसिद्ध और पहले आंचलिक उपन्यास **'देहाती दुनिया' (1926)** से लिया गया है। आंचलिक उपन्यास वे होते हैं जिनमें किसी विशेष क्षेत्र (अंचल) की भाषा, संस्कृति और रहन-सहन का चित्रण होता है।

2. विस्तृत सारांश

बचपन का नाम: लेखक का असली नाम 'तारकेश्वरनाथ' था, लेकिन उनके पिता उन्हें प्यार से 'भोलानाथ' कहकर बुलाते थे।

पिता के साथ दिनचर्या: भोलानाथ का अधिकांश समय पिता के साथ बीतता था। वह पिता के साथ ही उठता, नहाता और शिव जी की पूजा में बैठता था। पिता उसके माथे पर भभूत (राख) का 'त्रिपुंड' (तीन रेखाओं वाला तिलक) लगाते थे, जिससे वह 'बम भोला' लगने लगता था। पूजा के बाद पिता राम-नाम बही में हज़ार बार राम-नाम लिखते और आटे की गोलियाँ बनाकर गंगा जी में मछलियों को खिलाने जाते, जहाँ भोलानाथ उनके कंधे पर बैठकर जाता था।

बचपन के खेल: भोलानाथ और उसके साथी मिट्टी और साधारण चीज़ों से खेलते थे। वे धूल से मिठाई की दुकान लगाते, दीये के तराज़ू बनाते, और धूल का घरौंदा (छोटा घर) बनाते थे। कभी वे खेती करने का नाटक करते, तो कभी बारात निकालने का। पिता भी कभी-कभी उनके खेल में शामिल हो जाते थे।

साँप का डर और माता का अँचल: एक दिन बच्चे बारिश के बाद मकई के खेत में एक बिल में पानी डाल रहे थे। तभी उसमें से चूहे की जगह एक खतरनाक साँप निकल आया। साँप को देखकर बच्चे बुरी तरह डर गए और रोते-चिल्लाते भागे। भोलानाथ का शरीर लहूलुहान हो गया। वह सीधा घर पहुँचा। पिता बाहर बैठे थे, लेकिन भोलानाथ उनके पास रुकने के बजाय सीधा भीतर गया और माँ की गोद (आँचल) में छिप गया। माँ ने घबराकर उसे गले लगा लिया और हल्दी लगाई। उस समय उसे केवल माँ के आँचल में ही शांति मिली।

3. पाठ का मूल भाव

इस पाठ का मूल भाव 'वात्सल्य' (बच्चों के प्रति निश्छल प्रेम) है। पाठ यह संदेश देता है कि यद्यपि बच्चा पिता से कितना भी जुड़ा हुआ हो और पिता उसे कितना भी प्यार करे, लेकिन विपत्ति, पीड़ा या डर के समय एक बच्चे को जो सुरक्षा और ममता **'माता के अँचल'** में मिलती है, वह संसार में कहीं और नहीं मिल सकती।

Schorbit